Dr.Sunita Kumari,Guest Asst Prof, Dept of H Sc
SNSRKS College, Saharsa
Part -I & II(Sub)

Dt.16/02/2022

प्रसार-विधियों की चयन एवं उपयोग को प्रभावित करने वाले तत्व :-

Ans:- प्रसार शिक्षण विधि को कई कारक प्रभावित करते हैं, जो निम्न लिखित हैं :—

(1) उपलब्ध पद्धतियाँ (Methods available):- शिक्षण विधियों को यह बात भी प्रभावित करती है कि किसी विशेष क्षेत्र में कौन-कौन सी विधियाँ प्रयोग किए जाने की सुविधा है। जैसे कुछ पद्धतियों में सिखाने के लिए विद्युत की उपलब्धता होनी जरूरी है। देखना होता है कि उस उन स्थानों पर बिजली मिल रही है कि नहीं। किन्हीं प्रदर्शनों के लिए यातायात का साधन होना जरूरी है। इन सबकी सुविधा वहाँ मिल रही है कि नहीं? यदि स्थान सबकी पहुँच में नहीं होगा तो समय, धन और श्रम सभी निरर्थक हो जाते हैं।

(2) विषयवस्तु की प्रकृति और लक्षित उद्देश्य (Nature of Subject-matter and the objective to be achieved)- सर्वश्रेष्ठ शिक्षण-विधि वह होती है, जो विषयवस्तु के अनुरूप हो। कृषि या गृहविज्ञान विविध क्षेत्रों से संबंधित व्यापक विषय है। इनके अंतर्गत सिखाए जानेवाले काम भी अनन्त हैं। अतः क्या सिखाना है, क्या बताना है, उसी के अनुसार शिक्षण-विधि का चुनाव करना चाहिए। इसी प्रकार यदि गृहिणी को कोई पौष्टिक व्यंजन बनाने की विधि बतानी है, तो प्रदर्शन करके बताना श्रेष्ठ होता है। क्योंकि इस विधि के अंतर्गत 'करके' सीखने का मौका दिया जाता है। यदि कृषक को बैंक से ऋण लेने के बारे में जानकारी देनी है तो इसका सबसे अच्छा तरीका है विचारों का आदान-प्रदान। समूह छोटा ही रखना ठीक है, क्योंकि उसमें प्रश्न पूछने, जिज्ञासा मिटाने तथा अपनी कठिनाईयों के बारे में बोलने का मौका मिलता है।

(3) समय की उपलब्धता (Time available):-- समय सीमित संसाधन है। कितना समय हाथ में मिल सकता है जिस बीच कुछ बताया और सिखाया जा सके, यह बात विधि के चुनाव को प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए, यदि यात्रा या भ्रमण द्वारा कुछ सिखाया जाना हो सकता है तो देखना होगा कि क्या सिखाने वाले या सीखनेवाले के पास उतने

लगने वाला समय है? सिखाने में यह भी जरूरी है कि विधि का प्रयोग दोहराया जाए। दोहराने में भी समय लगता है। अतः ऐसी हालत में विचार-विमर्श या भाषण आदि जैसी कम समय लेनेवाली विधि कारगर साबित हो सकती है और इनमें दोहराने में भी कठिनाई नहीं होती है।

(4) सामान्य स्थानीय परिस्थितियाँ (General local condition): — शिक्षण-विधि को प्रभावित करने वाले कारकों में यह भी एक महत्वपूर्ण बात है कि वह स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल है कि नहीं। जैसे — मौसमी काम, मौसम की अवस्था, मिलने तथा विचार-विमर्श करने के लिए स्थान, अन्यान्य व्यवस्था तथा उपलब्ध नेतृत्व किस प्रकार का है इन सबको देखकर ही निर्णय लिया जाना चाहिए कि ऐसी विशेष परिस्थिति में कौन-सी विधि सबसे अच्छी हो सकती है।

(5) सामानों और सुविधाओं की उपलब्धता (Availability of materials and other facilities): — सभी सामान और सुविधायें सभी स्थानों पर नहीं मिल पाते हैं। कौन-सी विधि प्रयोग में लायी जाए, इसे यह बात भी प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए यदि जिन विधियों में प्रोजेक्टर, ऑपरेटर तथा जेनरेटर का प्रयोग किया जाना है, उन्हें ऐसे स्थल पर प्रयोग नहीं किया जा सकता है, जहाँ इन सब को पहुँचाने का जरिया न हो। इनसे संबंधित किन चीजों का, वहाँ पर पहले से रहना जरूरी है तथा इसमें लगने वाले खर्च की पूरी व्यवस्था है कि नहीं, आदि बातों पर भी विधि का चुनाव आधारित है।

(6) शिक्षक की रुचि तथा योग्यता (Interests and Abilities of the teacher): — शिक्षकों की प्रायः कुछ विधियों के प्रति रुचि होती है और कुछ विशेष विधियों के प्रयोग में उन्हें महारत हासिल रहती है। इसलिए प्रसार-विधि के चुनाव में अपनी रुचि, क्षमता और कुशलता का अनुमान लगा लेना अच्छा रहता है, परन्तु अन्य प्रभावी

विधियों में भी रुचि बढ़ानी चाहिए। उन्हें सफलतापूर्वक प्रयोग करने के तरीके सीखते रहना चाहिए।

(7.) विधियों की प्रभावशीलता (Effectiveness of the methods):- सर्वेक्षणों और अनुसंधानों से पता लगाया जाता है कि कहां, कौन-कौन सी प्रसार विधि अधिक प्रभावशाली तरीके से काम कर सकती है? इसी संदर्भ में यह पाया गया है कि भारतीय ग्रामीण जनता, सिनेमा से ज्यादा प्रभावित होती है। इसके बाद प्रदर्शन, वैचारिक आदान-प्रदान तथा फार्म और गृह-निरीक्षणों का स्थान है। प्रसार-विधि का चुनाव अनुभव के आधार पर भी किया जाता है। अर्थात् किस विधि का कहां पर सफलतापूर्वक प्रयोग किया गया है और वह अधिक प्रभावी भी सिद्ध हुई है।